अनुवाद

यदि आपके विचार में मेरे द्वारा आपका वह विश्वरूप देखा जा सकता है, तो हे प्रभो ! हे योगेश्वर ! कृपया उसी अविनाशी रूप का मुझे दर्शन कराइये।।४।।

तात्पर्य

शास्त्र का सिद्धान्त है कि प्राकृत इन्द्रियों से भगवान् श्रीकृष्ण को न तो देखा जा सकता है, न सुना जा सकता है और न अनुभव ही किया जा सकता है। किन्तु यदि कोई प्रारम्भ से भगवद्भक्ति के परायण रहे तो वह श्रीभगवान् का साक्षात्कार करने के योग्य हो जाता है। जीवात्मा चैतन्य का एक अणु मात्र है; इसलिए वह अपने बल पर परम चैतन्य परमेश्वर श्रीकृष्ण को देख अथवा तत्त्व से जान नहीं सकता। भक्त अर्जुन ज्ञानमार्ग की अनुमान शक्ति पर निर्भर नहीं है। उसने माना है कि जीव होने के कारण वह सर्वथा अपूर्ण है, जबकि श्रीकृष्ण अनन्त हैं, उनकी महिमा अगाध है। अर्जुन समझ सकता है कि जीव अपने उद्यम से अनन्त को नहीं जान सकता; अनन्त द्वारा कृपापूर्वक अपने को उद्घाटित करने पर ही वह उनका तत्त्व जान पाता है। श्रीभगवान् के लिए यहाँ **योगेश्वर** शब्द महत्त्वपूर्ण है। तात्पर्य यह है कि वे अचिन्त्य-शक्ति-सम्पन्न हैं, इसलिए यदि चाहें तो अनन्त होने पर भी अपने को प्रकट कर सकते हैं। अस्तु, अर्जुन श्रीकृष्ण से उनके अचिन्त्य अनुग्रह की याचना कर रहा है, आदेश नहीं दे रहा। श्रीकृष्ण तब तक किसी को अपना दर्शन कराने को बाध्य नहीं हैं, जब तक वह कृष्णभावनाभावित होकर पूर्ण रूप से उनके शरणागत और भक्तिनिष्ठ न हो जाय; मनोधर्म के बल पर निर्भर रहने वाले मनुष्य के लिए उनका दर्शन अलभ्य है।

श्रीभगवानुवाच।
पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।।५।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **पश्य**=देख; **मे**=मेरे; **पार्थ**=हे अर्जुन; **रूपाणि**=रूप; **शतशः**=सैकड़ों; **अथ**=तथा; **सहस्रशः**=हजारों; **नानाविधानि**=नाना प्रकार के; **दिव्यानि**=अलौकिक; **नाना**=विविध; **वर्ण**=रंग; **आकृतीनि**=आकार वाले; **च**=और।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन ! हे पार्थ ! अब तू मेरी विभूतियों—सागर के सदृश नाना वर्ण और आकार वाले सैकड़ों-हजारों दिव्य रूपों को देख।।५।।

तात्पर्य

अर्जुन श्रीकृष्ण के उस विश्वरूप के दर्शन का अभिलाषी है, जो लोकोत्तर होते हुए भी प्रकट सृष्टि के निमित्त से प्रकाशित होता है और इस कारण जो माया के अनित्य-कालचक्र से बाधित है। माया के समान ही श्रीकृष्ण का यह विश्वरूप भी समय-समय पर प्रकट-अप्रकट हुआ करता है। यह श्रीकृष्ण के स्वयंरूपों के समान